तुलसीदास 1532-1623

1. मुगलकालीन भारतीय जीवन परतन्त्रता की आड़ में कुसंस्कृति का करुण चित्कार कर रहा था, जब ऐसे मार्ग दर्शक सत्य साहित्य स्रष्टा की आवश्यकता थी तो गोस्वामी तुलसीदासजीने अवनति के गर्त में गिरते भारतीय समाज को सम्बल दिया।

मानव स्वभाव के चित्रकार कवि गोस्वामी तुलसीदास जी ने हिन्दी साहित्य में गौरव प्रदान किया है। इनकी प्रतिभा अद्वितीय थी। हिन्दी साहित्य के सर्वश्रेष्ट कवि होने का श्रेय गोस्वामी जी को है। 'रामचरितमानस' गोस्वामी तुलसी जी की अमरकृति है। हिन्दुस्तान के हिन्दू वर्ग के लिए यह काव्य ही नहीं वरन् गहना बन चुकी है। इस काव्य में राम के रूप में व्यक्ति को मार्ग दर्शन मिलता है मनुष्य के मर्यादा की रक्षा हुई है इस अमर काव्य 'श्रीरामचरितमानस' में।

अधर्म के ऊपर धर्म की जय के सत्यनारायण दिव्यकला के प्रति भारतीय मनीषा जो आत्म निवेदन किया है वही रामकथा के

Scanned with CamScanner

लिए मूर्तिमंत हो गयी। गोस्वामी तुलसीदास जी ने 'श्रीरामचरितमानस' का सृजन जिस समय में कर रहे थे, वह समय हिन्दी साहित्य में भक्ति काल कहा जाता है।

अपने आर्थिक जीवन में तुलसी जी को अनेक परेशानियाँ झेलनी पड़ी। बचपन में ही माँ, पिता के स्वर्गवास हो जाने के कारण, चुनिया नामक दाई ने इन्हें पोसा और पाला। उसके बाद महात्मा नरहरिदास जी ने अपने साथ रखने लगे। इनके बचपन का नाम रामबोला था। रत्नावली नामक सरयूपारी नामक ब्राह्मण की कन्या से तुलसी जी का विवाह हुआ। पत्नी के प्रेम में इतना डूब गए कि रत्नावली के बिना एक पल भी रहना कठिन हो गया। अचानक रत्नावली की माँ बीमार पड़ी, रत्नावली को भाई माइके जाने के लिए गोस्वामी तुलसीदास जी के घर आया। तुलसीदास जी ने न जाने की अनुमति दिए। तुलसी जी को घर में न पाकर रत्नावली भाई के साथ माइके चल पड़ी। तुलसीदास जी रत्नावली को घर में न पाकर शीघ्र ससुराल चल पड़े। रात का समय था। स्वाभाविक वहाँ के लोग सो गए थे, चारों तरफ अंधकार छाया हुआ था, तभी गोस्वामी तुलसीदास दरवाजे पर किसी को न देखकर जोर से चिल्लाए। तभी रत्नावली दरवाजा खोलकर दौड़ती हुई आई और हँसती हुई बोली :-

"लाज न लागत आपको दौरे आयो साथ
धिक-धिक ऐसे प्रेम को कहा कहहु मैं नाथ ॥
अस्थि चर्ममय देह मम, तामे जैसी प्रीति
जैसी जो श्रीराम महँ होति न तौ भव भीति"

गोस्वामी जी को यह शब्द बाण की तरह लगा। वहाँ से उलटे पांव लौट पड़े, पत्नी रत्नावली से विरक्त होकर, काशी, मथुरा, इत्यादि स्थान पर भ्रमण किए इसी दौरान 'श्रीरामचरितमानस' का सृजन किए।

कुमार

Scanned with CamScanner